ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

शहरी समाज, स्त्री दृष्टि और ममता कालिया का कथा साहित्यः एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण

पृथ्वी राज, पी.एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान
डॉ. धनेश कुमार मीणा, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान

सारांश

यह शोध–पत्र ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि और शहरी समाज की अभिव्यक्ति का समग्र और आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। ममता कालिया की कहानियाँ शहरी मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, स्त्री के आत्मबोध, सामाजिक विरोधाभासों तथा पारिवारिक संबंधों की गूढ़ताओं को यथार्थवादी और सजीव भाषा में उद्घाटित करती हैं। यह अध्ययन उनके साहित्य में नारी के संघर्ष, उसकी मानसिक स्थिति और सामाजिक परिवेश के बीच के द्वंद्व को समझने का प्रयास है। साथ ही, शोध में यह भी परखा गया है कि किस प्रकार ममता कालिया की रचनाएँ समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा देती हैं। अंततः यह शोध स्त्री लेखन के क्षेत्र में ममता कालिया के योगदान को प्रमुखता से स्थापित करता है तथा शहरी समाज के साहित्यिक प्रतिबिंब को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य, विशेषकर हिंदी कथा–साहित्य में, स्त्री लेखन की भूमिका समय के साथ–साथ लगातार सशक्त होती गई है। पूर्वकाल में जहां साहित्य की प्रमुख अभिव्यक्ति पुरुष लेखकों तक सीमित थी, वहीं अब स्त्री लेखन ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। स्त्री चेतना, अस्मिता, और आत्मबोध की वैचारिक अभिव्यक्ति अब केवल नारी के व्यक्तिगत अनुभव तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विमर्शों का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। स्त्री लेखन ने परंपरागत कथानकों को चुनौती दी है और नारी की नई समझ, उसकी पीड़ा, उसके संघर्ष और उसकी इच्छाओं को साहित्य के माध्यम से समकालीन समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

इस संदर्भ में ममता कालिया का नाम न केवल एक प्रतिष्ठित महिला कथाकार के रूप में उभरता है, बल्कि वे हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन की एक सशक्त आवाज भी हैं। ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी का व्यक्तित्व बहुआयामी रूप में उभरता है कृ जहाँ वह एक संवेदनशील पुत्री, सशक्त बहन, संघर्षशील पत्नी, और साहसी समाज–सुधारक के रूप में अपनी भूमिकाएँ निभाती है। उनकी कहानियाँ शहरी मध्यवर्गीय जीवन के जटिल पहलुओं को खोलकर सामने लाती हैं।

शहरी समाज की तेजी से बदलती संरचना, मानवीय रिश्तों की पेचीदगियाँ, पारिवारिक दबाव, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच टकराव ममता कालिया की कहानियों का मूल विषय है। वे अपनी लेखनी से इस दहलीज पर खड़ी स्त्री की आंतरिक मनःस्थिति और बाहरी संघर्ष दोनों को बारीकी से उकेरती हैं। उनकी भाषा सरल, सजीव और प्रभावशाली है, जो पाठक को सीधे स्त्री के अनुभव और भाव में डुबो देती है। यह शोध–पत्र ममता कालिया के कथा साहित्य का एक समग्र और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें विशेष रूप से स्त्री दृष्टिकोण और शहरी समाज की परतों को समझने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत यह अध्ययन किया जाएगा कि ममता कालिया की कहानियाँ किस प्रकार स्त्री के भीतर छिपे यथार्थ को उद्घाटित करती हैं, और शहरी जीवन की किन–किन विसंगतियों तथा सामाजिक चुनौतियों को उनकी रचनाएँ सामने लाती हैं। साथ ही यह भी विश्लेषित किया जाएगा कि उनका साहित्य नारी विमर्श और समकालीन सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों के संदर्भ में क्या योगदान देता है। समकालीन हिंदी कथा साहित्य में ममता कालिया का स्थान इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने पारंपरिक नारी पात्रों को नए सांचे में ढालने का साहस दिखाया है। उनके लेखन में नारी की परिपक्वता, उसके आत्म–निर्णय की स्वतंत्रता, और उसकी सामाजिक जड़ों से लड़ाई साफ़ झलकती है। यह शोध–पत्र इन सभी बिंदुओं पर गहन दृष्टि डालेगा और इस बात का निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा कि ममता कालिया की कहानियाँ न केवल साहित्य की दुनिया में, बल्कि सामाजिक विमर्श में भी एक नए युग की शुरुआत करती हैं।

साहित्य–समीक्षा

कालिया, ममता. (2022) ममता कालिया का ब्लैक होल कहानी संग्रह समकालीन शहरी समाज की जटिलताओं और स्त्री जीवन की विडंबनाओं का गहन चित्रण प्रस्तुत करता है। लेखिका ने इसमें मध्यवर्गीय

जीवन की टूटन, स्त्री की आत्मचेतना, दांपत्य संबंधों की खामियों और सामाजिक ढांचे की विसंगतियों को सरल किन्तु प्रभावशाली भाषा में उजागर किया है। इन कहानियों की स्त्रियाँ आत्मनिर्भर, सजग और विद्रोही हैं, जो पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देती हैं। ममता कालिया की शैली में यथार्थबोध के साथ व्यंग्य का पुट है, जो पाठक को सोचने के लिए बाध्य करता है। ब्लैक होल न केवल स्त्री दृष्टि का संवाहक है, बल्कि समकालीन सामाजिक यथार्थ का सशक्त दर्पण भी है।

कुमार, राकेश. (2020) राकेश कुमार की यह पुस्तक हिंदी कथा साहित्य में शहरी समाज के विविध पक्षों की पहचान और विश्लेषण का महत्वपूर्ण प्रयास है। लेखक ने प्रेमचंद से लेकर समकालीन लेखकों तक की रचनाओं में उभरते शहरी जीवन, मध्यवर्गीय मानसिकता, सामाजिक विषमता, और आधुनिक जीवन शैली की जटिलताओं को गहराई से विश्लेषित किया है। कृति में यह स्पष्ट किया गया है कि शहरी परिवेश केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि एक मानसिक स्थिति भी है, जो कथा पात्रों की सोच, संबंधों और संघर्षों को प्रभावित करती है। राकेश कुमार की भाषा शोधपरक, सुसंगठित और विश्लेषणात्मक है। यह पुस्तक शहरी यथार्थ के साहित्यिक अध्ययन के लिए एक सशक्त स्रोत है।

त्रिपाठी, रमेश. (2018). रमेश त्रिपाठी की यह पुस्तक समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श की विचारधारा और अभिव्यक्ति का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। लेखक ने नारी अस्मिता, आत्मबोध, पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रतिरोध, और स्त्री–पुरुष संबंधों की पुनर्रचना जैसे मुद्दों पर केंद्रित उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। कृति में मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया जैसे रचनाकारों के स्त्री पात्रों को स्त्री चेतना के विकासक्रम में देखा गया है। रमेश त्रिपाठी की भाषा वैज्ञानिक और संतुलित है, जो शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी बनाती है।

शर्मा, उषा. (2012). उषा शर्मा द्वारा रचित यह ग्रंथ हिंदी कथा साहित्य में स्त्री दृष्टिकोण की अवधारणा और उसकी विकास यात्रा का सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत करता है। लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि किस प्रकार हिंदी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री केवल पात्र नहीं रही, बल्कि विचार और दृष्टिकोण का केंद्र बनी है। इस पुस्तक में स्त्री पात्रों के माध्यम से सामाजिक असमानता, पारिवारिक दबाव, लैंगिक भेदभाव और आत्म–निर्णय के संघर्ष को विश्लेषित किया गया है। उषा शर्मा ने स्त्री विमर्श को केवल वैचारिक आंदोलन न मानकर उसे साहित्यिक यथार्थ से जोड़ा है। यह कृति स्त्री दृष्टि के विविध स्तरों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

ममता कालियाः जीवन और साहित्यिक परिचय

जीवन परिचय

ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 को उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक नगर वृंदावन में हुआ। प्रारंभ से ही वे शिक्षा के प्रति अत्यंत रुचि रखने वाली रहीं और साहित्य की ओर उनका झुकाव बचपन से ही स्पष्ट था। ममता कालिया ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद शिक्षण के क्षेत्र में कदम रखा और अनेक शैक्षणिक संस्थानों में अध्यापन कार्य किया। उनका करियर खासतौर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय में उल्लेखनीय रहा, जहाँ वे प्राचार्य के पद तक पहुँचीं। उनका शैक्षणिक जीवन और साहित्यिक रचनाएँ दोनों एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे न केवल शिक्षिका के रूप में बल्कि एक सशक्त स्त्री लेखिका के रूप में भी प्रसिद्ध हुईं। ममता कालिया की लेखनी में नारी जीवन के विविध पहलुओं की सजीव अभिव्यक्ति मिलती है, जो उनकी स्वयं की संवेदनशीलता और सामाजिक जागरूकता का परिणाम है। उनकी कहानियाँ, उपन्यास और कविताएँ सामाजिक यथार्थ, स्त्री चेतना और शहरी जीवन के विविध संघर्षों को सामने लाती हैं। ममता कालिया की लेखनी में नारी के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक द्वंद्वों की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। वे अपने साहित्य के माध्यम से महिलाओं की आंतरिक पीड़ा, उनके अधिकारों के लिए संघर्ष और सामाजिक बंधनों से मुक्ति की इच्छा को अभिव्यक्त करती हैं।

प्रमुख कृतियाँ

ममता कालिया का साहित्यिक योगदान अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है। उन्होंने कथा साहित्य, कविता, निबंध और संपादन के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्य प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हैं, बल्कि विद्वानों और आलोचकों के बीच भी उनकी गहरी समझ और शैली के लिए सम्मानित हैं।

उपन्यास

उनके उपन्यासों में सामाजिक और स्त्री विमर्श के विविध पहलुओं को बारीकी से उठाया गया है। उनके

कुछ प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित हैं:
दौड़: यह उपन्यास शहरी जीवन की दौड़ और उसमें फंसे इंसान की बेचैनी को उजागर करता है।
बेघर: यहाँ स्त्री के अस्थिर जीवन और सामाजिक बहिष्कार की गहराई से जांच की गई है।
नरक दर नरक: पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के दुख और जद्दोजहद का मार्मिक चित्रण।
दिल्ली की दीवार: शहरी दिल्ली के बदलाव और सामाजिक विसंगतियों को रेखांकित करता उपन्यास।
सपनों की होम डिलीवरी: स्त्री के सपनों और वास्तविकताओं के बीच की दूरी को दर्शाता है।
कुछ भी तो रीत नहीं: पारंपरिक रीतियों और आधुनिकता के टकराव को उजागर करता उपन्यास।

कहानी संग्रह

ममता कालिया की कहानियाँ स्त्री के जीवन की जटिलताओं और सामाजिक संरचनाओं की विसंगतियों को अभिव्यक्त करती हैं। उनकी कुछ महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैंरू

व्यतिक्रम

ब्लैक होल, तुम्हें चुनती हूँ, छुटकारा, पुनर्वास
इन कहानियों में जीवन के व्यावहारिक संघर्ष, मानसिक द्वंद्व, और सामाजिक अवरोधों का मार्मिक चित्रण मिलता है।

कविता संग्रह

ममता कालिया ने कविता के क्षेत्र में भी अपनी संवेदनशीलता और गहराई का परिचय दिया है। उनके कविता संग्रह निम्नलिखित हैं:
अंदर का रास्ता, भूख उसे नहीं लगती, टूटती चीज़ें
इन कविताओं में मानवीय भावनाओं, स्त्री मन की पीड़ा और सामाजिक विषमताओं की अभिव्यक्ति है।

निबंध संग्रह

ममता कालिया न केवल साहित्यकार हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर गहरी सोच रखने वाली लेखिका भी हैं। उनके निबंध संग्रह में सामाजिक विसंगतियाँ, सांस्कृतिक परिवर्तनों और स्त्री जीवन के विविध पहलुओं पर विचार मिलते हैं। प्रमुख निबंध संग्रह हैं:
कल्चर वल्चर, शराबी बीवी का बयान

शहरी समाज का चित्रण

शहरी समाज की संरचना

ममता कालिया का कथा साहित्य शहरी जीवन की जटिलताओं, विरोधाभासों और विडंबनाओं को बहुत ही सूक्ष्मता और यथार्थवाद के साथ प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाओं में शहरी जीवन केवल एक पृष्ठभूमि नहीं बल्कि पात्रों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संघर्षों का प्रमुख संदर्भ है। महानगरों की भीड़, शोर—गुल, भागदौड़, और उस भीड़ में छुपा अकेलापन उनकी कहानियों का स्थायी विषय रहता है। ममता कालिया ने शहरी जीवन के सतही चमक—धमक को छोड़कर इसके भीतर मौजूद तनावों, असंतोष और व्यक्तिगत विफलताओं को अपनी कहानियों में जीवंत किया है। उनके पात्र किसी आदर्शवादी दुनिया का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे वास्तविक जीवन की जटिलताओं, निराशाओं, असफलताओं और कुंठाओं के साथ संघर्ष करते नजर आते हैं। वे अपने छोटे—छोटे स्वार्थों, सामाजिक दबावों और मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों में उलझे हुए होते हैं, जो शहरी जीवन की यथार्थता को दर्शाता है।

उदाहरण के तौर पर, उनके उपन्यास दौड में नायिका की जिंदगानी शहरी जीवन की गहन दास्तां है। वह अपने अस्तित्व को साबित करने के लिए निरंतर दौड़ती रहती है कृ नौकरी पाने के लिए, आत्मनिर्भर बनने के लिए, और समाज में स्वीकृति प्राप्त करने के लिए। इस दौड़ को कालिया ने केवल भौतिक संघर्ष नहीं बल्कि मानसिक और भावनात्मक जद्दोजहद के रूप में भी दर्शाया है। यह उपन्यास शहरी जीवन की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है, जहाँ हर व्यक्ति अपने अस्तित्व की खोज में कहीं न कहीं खुद से भी भाग रहा होता है। इस दौड़ में अकेलापन, तनाव और कभी—कभी आत्मग्लानि भी छिपी होती है।

ममता कालिया के पात्रों की इसी असमंजसपूर्ण और जटिल प्रकृति से पाठक सहज ही जुड़ाव महसूस करता है। वे न केवल अपनी ज़िंदगी के संघर्षों में फंसे होते हैं, बल्कि समाज की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच भी जूझते हैं। यही वजह है कि उनका शहरी समाज का चित्रण केवल सतही नहीं बल्कि गहन और मनोवैज्ञानिक होता है।

मध्यवर्गीय मानसिकता

शहरी समाज में मध्यवर्ग एक महत्वपूर्ण और व्यापक वर्ग है, जिसकी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

विशेषताएँ ममता कालिया के कथा साहित्य का मुख्य विषय हैं। यह वर्ग अक्सर आर्थिक संसाधनों के अभाव में अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने की कोशिश करता है, और इसी संघर्ष की प्रक्रिया में उसकी मानसिकता, व्यवहार और संबंधों की जटिलताएँ जन्म लेती हैं। ममता कालिया ने इस मध्यवर्गीय मानसिकता को बड़े ही सूक्ष्म और व्यंग्यात्मक अंदाज में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में यह वर्ग आर्थिक दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा, परिवार की जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच फंसा हुआ दिखाई देता है। वे अपने जीवन में स्थायित्व और सम्मान की तलाश करते हैं, परन्तु अक्सर छोटी–छोटी बातों पर झगड़ा, गलतफहमी और स्वार्थ उन्हें अस्थिर कर देते हैं। उनके पात्र इस वर्ग की मानसिकता के अनुरूप व्यवहार करते हैंकृजो कभी दिखावे और प्रतिस्पर्धा की होड़ में उलझ जाते हैं, तो कभी अपने स्वार्थों के कारण पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को खो देते हैं। वे अपनी सीमित संसाधनों के बावजूद बेहतर जीवन की लालसा रखते हैं, जो कई बार तनाव और निराशा का कारण बनती है।

ममता कालिया के व्यंग्यपूर्ण कथानक इस बात की ओर संकेत करते हैं कि शहरी मध्यवर्गीय समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक सफलता के लिए चल रही यह दौड़ व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक मेलजोल पर गहरा असर डालती है। इसके परिणामस्वरूप रिश्ते जटिल हो जाते हैं और व्यक्ति अपनी असली पहचान खोने लगता है। शहरी मध्यवर्ग की यह मानसिकता उनके कथानकों में अलग–अलग रूपों में उभरती है कृ कभी नौकरी के दबाव के रूप में, कभी परिवार के अंदर तनाव के रूप में, और कभी सामाजिक अपेक्षाओं के भार के रूप में। इन सभी को ममता कालिया ने अपनी कहानियों में बारीकी से उकेरा है, जिससे पाठक न केवल पात्रों के संघर्ष को समझ पाता है, बल्कि उनके मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पक्षों की भी गहराई से जानकारी मिलती है।

स्त्री दृष्टि और नारी विमर्श

आत्मबोध और अस्मिता

ममता कालिया की रचनाओं में स्त्रियाँ पारंपरिक रूप से समाज में स्थापित नायिकाओं से बिल्कुल अलग होती हैं। वे उन 'बलिदान देने वाली देवियों' का रूप नहीं धारण करतीं, जिनसे समाज परंपरागत रूप से नारी को जोड़ता आया है। उनके पात्र स्वयं के अस्तित्व के लिए संघर्षशील, जागरूक और सशक्त हैं। वे केवल समाज द्वारा तय किए गए नियमों और पितृसत्तात्मक संरचनाओं को स्वीकार नहीं करतीं, बल्कि उन पर सवाल उठाती हैं और चुनौती देती हैं। ममता कालिया का स्त्री विमर्श नारेबाजी या विचारधारा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह यथार्थ के धरातल पर खड़ा होता है। वे स्त्री के जीवन के जटिल अनुभवों को बिना किसी आवरण के सामने लाती हैं। उनकी नायिकाएँ अपने भीतर झांकती हैं, अपने दर्द और विरोधाभासों को समझती हैं और फिर अपने लिए नई पहचान तलाशती हैं। यह आत्मबोध और अस्मिता की खोज उनकी कहानियों का मुख्य केन्द्र बिंदु है।

उदाहरण स्वरूप, कहानी तुम्हें चुनती हूँ में स्त्री अपने पति को छोड़कर एक नए जीवन साथी को चुनने का साहस करती है। यह निर्णय न केवल एक पारंपरिक परिवारिक ढांचे को चुनौती देता है, बल्कि यह आत्मनिर्णय और स्वायत्तता का प्रतीक भी है। इस कहानी में स्त्री ने अपनी खुशी और स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी है, जो एक नई सोच और चेतना का परिचायक है। ममता कालिया ने इस तरह के पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया है कि स्त्री अपनी अस्मिता और आत्मबोध के लिए सशक्त होकर उठ खड़ी हो सकती है।

स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता

ममता कालिया के कथा साहित्य में आर्थिक स्वतंत्रता को स्त्री मुक्ति की मूलशिला माना गया है। उनकी नायिकाएँ पढ़ी–लिखी, जागरूक और अपने पैरों पर खड़ी होती हैं। वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपनी जिंदगी के निर्णय खुद लेती हैं। आर्थिक स्वावलंबन उन्हें सामाजिक निर्भरता और पितृसत्तात्मक नियंत्रण से बाहर निकलने में मदद करता है। उनके उपन्यास बेघर की नायिका इस अर्थ में बहुत महत्वपूर्ण पात्र है। यह पात्र पारंपरिक सुरक्षा की अवधारणा, जो मुख्यतः पुरुष या परिवार से जुड़ी होती है, को तोड़ती है और खुद ही अपने लिए जीवन का आधार तैयार करती है। आर्थिक सुरक्षा के बिना स्त्री जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी स्वतंत्रता पा सकती है, इस सोच को ममता कालिया ने जोरदार तरीके से स्थापित किया है। उनकी कहानियाँ यह भी दिखाती हैं कि आर्थिक स्वतंत्रता सिर्फ नौकरी पाने या पैसा कमाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक स्वतंत्रता की भी नींव है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र स्त्री समाज के बंधनों को तोड़कर खुद को सशक्त कर सकती है और अपने जीवन के नियंत्रण में आ सकती है।

पारिवारिक संबंधों में स्त्री की भूमिका

ममता कालिया के साहित्य में विवाह और परिवार की संस्था पर गंभीर और सटीक प्रश्न उठाए गए हैं। वे दिखाती हैं कि कैसे सामाजिक और पारिवारिक दबाव स्त्री को कैद की तरह जकड़ लेते हैं। विवाह कभी स्त्री के लिए सुरक्षा का माध्यम होता है, तो कभी उसके लिए संघर्ष और पीड़ा का कारण भी बन जाता है। परिवार के भीतर स्त्री का अस्तित्व कई बार उपेक्षित और अनदेखा हो जाता है, जहाँ उसकी इच्छाओं और सपनों को दबा दिया जाता है। उनकी नायिकाएँ इस पारंपरिक ढांचे को चुनौती देती हैं, विद्रोह करती हैं और अपने लिए नए रास्ते तलाशती हैं। वे केवल परंपराओं की गुलाम नहीं रहना चाहतीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं को बदलने की इच्छा रखती हैं। ममता कालिया के कथा संसार में स्त्री का संघर्ष केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं बल्कि पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर भी दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ दिखाती हैं कि परिवार और विवाह में स्त्री की भूमिका अब केवल गृहिणी या मातृत्व की सीमाओं में नहीं बंधी रह सकती। वे अपने अस्तित्व के लिए लड़ती हैं, अपने अधिकारों की मांग करती हैं और अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रयासरत रहती हैं। इस संदर्भ में ममता कालिया का नारी विमर्श समाज की जकड़न और पितृसत्ता के खिलाफ एक जागरूक और सक्रिय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

भाषा और शिल्प

सहजता और व्यंग्य

ममता कालिया की भाषा उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। उनकी लेखनी में सहजता और प्रवाहमयता का अद्भुत मेल देखने को मिलता है, जो पाठक को बिना किसी कठिनाई के सीधे कथा संसार में ले जाती है। वे जटिल विषयों और गहरे सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दों को भी सरल और प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत करती हैं। उनकी भाषा कहीं भी भारी–भरकम या अलंकारिक नहीं होती, बल्कि आम बोलचाल की भाषा में वे जीवन के जटिल पहलुओं को सहजता से व्यक्त कर लेती हैं। ममता कालिया की कहानियों और उपन्यासों में व्यंग्य का भी गहरा समावेश है। वे सामाजिक विसंगतियों, पितृसत्ता के कठोर नियमों, और मध्यवर्गीय स्वार्थों को व्यंग्यात्मक और प्रहसनात्मक लहजे में प्रस्तुत करती हैं, जिससे पाठक के मन में न केवल गंभीरता आती है, बल्कि हंसी के माध्यम से कटु सत्य का बोध भी होता है। यह व्यंग्य उनकी भाषा को जीवंत और संवादों को और भी प्रभावशाली बनाता है। उनके संवाद इतने सजीव होते हैं कि पाठक महसूस करता है कि पात्र सामने खड़े होकर बात कर रहे हैं।

प्रतीक और यथार्थ

ममता कालिया की रचनाओं में प्रतीकात्मकता की अपेक्षा यथार्थवाद को अधिक महत्व दिया गया है। वे अपने पात्रों और घटनाओं को समाज के सजीव आइने में प्रतिबिंबित करती हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास किसी भी काल्पनिक कल्पना पर आधारित नहीं होते, बल्कि जीवन की वास्तविकताओं, सामाजिक संघर्षों और मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों पर केंद्रित होते हैं। उनका साहित्य यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधि है, जहाँ पात्रों के जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं, उनकी भावनाओं, और सामाजिक परिवेश का बारीकी से वर्णन होता है। ममता कालिया अपने पात्रों के माध्यम से समाज की विभिन्न विसंगतियों, आर्थिक कठिनाइयों और मानसिक तनावों को खुले तौर पर प्रस्तुत करती हैं। हालांकि उनकी रचनाओं में कुछ स्थानों पर प्रतीकात्मकता भी मिलती है, जैसे कि कुछ वस्तुएँ या घटनाएँ पात्रों के आंतरिक संघर्षों और सामाजिक परिस्थितियों का संकेत देती हैं, परन्तु ये प्रतीक उनके कथानक का मुख्य आधार नहीं होते। उनकी प्राथमिकता हमेशा यथार्थ को प्रस्तुत करने की रहती है ताकि पाठक समाज की वास्तविकता से रूबरू हो सके और उसमें परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस कर सके।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण

स्त्री विमर्श की सीमाएँ

ममता कालिया का स्त्री विमर्श समकालीन हिंदी साहित्य में अत्यंत सशक्त और प्रभावशाली माना जाता है। उन्होंने स्त्री जीवन के अनेक पहलुओं को खुलकर प्रस्तुत किया है, जो स्त्री चेतना को जागृत करने में सहायक हैं। किंतु कई आलोचकों ने इस स्त्री विमर्श की कुछ सीमाओं की ओर भी ध्यान दिलाया है। विशेष रूप से यह कहा जाता है कि उनका लेखन मुख्यतः उच्च मध्यमवर्गीय स्त्रियों के जीवन, उनकी मानसिकता और सामाजिक परिस्थितियों पर केंद्रित रहता है। उनकी अधिकांश नायिकाएँ शहरी मध्यमवर्गीय परिवारों से आती हैं, जो पढ़ी–लिखी, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और सामाजिक संदर्भ में अपेक्षाकृत स्वतंत्र होती हैं। इस कारण उनकी कहानियाँ और उपन्यास उन स्त्रियों के अनुभवों को प्रमुखता देते हैं, जिनके पास कुछ न कुछ संसाधन और सामाजिक आधार होता है। परंतु, इस दृष्टि से देखा जाए तो

उनका स्त्री विमर्श ग्रामीण, मजदूर वर्ग या निम्न आर्थिक वर्ग की स्त्रियों के जीवन के दर्द, संघर्ष और सामाजिक दमन को समेट नहीं पाता। उदाहरण के लिए, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की स्त्रियाँ जहाँ जातिगत, धार्मिक और आर्थिक आधार पर कई गुना अधिक समस्याओं का सामना करती हैं, वे उनकी रचनाओं में अपेक्षाकृत कम दिखाई देती हैं। इसलिए कुछ आलोचक यह मानते हैं कि ममता कालिया का स्त्री विमर्श समग्र या सर्वग्राही नहीं है, बल्कि वह एक विशेष सामाजिक वर्ग और उसकी समस्याओं तक सीमित रह जाता है। इस प्रकार उनका स्त्री विमर्श व्यापक समाज के सारे आयामों को समेट पाने में पूर्णतः सक्षम नहीं है।

सामाजिक प्रतिबद्धता

इसके बावजूद, यह स्पष्ट और निर्विवाद है कि ममता कालिया ने जिस शहरी मध्यमवर्गीय स्त्री वर्ग को अपनी कहानियों का केंद्र बनाया है, उनके अनुभवों को वे अत्यंत प्रामाणिकता, संवेदनशीलता और आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करती हैं। उनकी लेखनी इस वर्ग की समस्याओं, आकांक्षाओं और विडंबनाओं को न केवल दर्शाती है, बल्कि उनसे जुड़े सामाजिक और मानसिक पहलुओं पर भी गहरा चिंतन करती है। ममता कालिया का साहित्य सामाजिक प्रतिबद्धता से प्रेरित है। वे अपने लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक बंधनों, आर्थिक और सामाजिक असमानताओं, और स्त्री स्वतंत्रता के मुद्दों पर विचारोत्तेजना पैदा करती हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों में यह स्पष्ट होता है कि वे न केवल व्यथा को प्रस्तुत करना चाहती हैं, बल्कि बदलाव और सुधार की संभावना भी देखती हैं। उनकी लेखनी पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है कि समाज की ये विसंगतियाँ किस प्रकार स्त्री के जीवन को प्रभावित करती हैं और इसके विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता क्यों है। इस दृष्टि से उनका साहित्य सामाजिक चेतना का संवाहक है, जो व्यापक बदलाव की दिशा में प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

ममता कालिया का कथा साहित्य समकालीन हिंदी साहित्य में शहरी समाज और स्त्री जीवन का अत्यंत सशक्त और मार्मिक प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाएँ केवल कहानी कहने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे एक सामाजिक दस्तावेज भी हैं जो हमारे समय की शहरी स्त्री की जटिलताओं, दुविधाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को समर्पित हैं। ममता कालिया ने अपने साहित्य के माध्यम से शहरी स्त्री की मनोवैज्ञानिक गहराइयों और सामाजिक सीमाओं को उजागर किया है, जो उन्हें मात्र उपन्यास की नायिका से कहीं आगे ले जाता है कृ वे एक जागरूक, स्वाभिमानी और आत्मसशक्त स्त्री की परिचायक बन जाती हैं। उनकी नायिकाएँ मुखर हैं; वे मौन नहीं हैं, वे प्रश्न करती हैं, अपने अधिकारों के लिए लड़ती हैं, और पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाओं को खुलकर चुनौती देती हैं। यह चुनौती केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्तरों पर भी प्रभावशाली है। ममता कालिया की कहानियाँ और उपन्यास इस बात के प्रमाण हैं कि स्त्री अब केवल परंपरागत भूमिकाओं तक सीमित नहीं रह सकती; वह स्वयं को परिभाषित करती है, अपनी अस्मिता की रक्षा करती है और समाज में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाती है। ममता कालिया की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे जटिल और गंभीर विषयों को अत्यंत सरल, सहज और प्रवाहमयी भाषा में प्रस्तुत करती हैं। उनकी लेखनी में कोई अतिशयोक्ति नहीं होती, न ही भाषा का भारीपन पाठक को बाधित करता है। इसके विपरीत, उनकी भाषा इतनी प्रभावशाली होती है कि पाठक सहज ही उनके पात्रों के मनोभावों और परिस्थितियों में घुल–मिल जाता है। यह सहजता उनकी रचनाओं को जनप्रिय बनाती है और समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचने में मदद करती है। उनका साहित्य न केवल स्त्री जीवन की दृष्य प्रस्तुत करता है, बल्कि उसे स्वयं देखने, समझने और पहचानने की दिशा में एक जागरूकता भी प्रदान करता है। वे स्त्री को अपने अस्तित्व के प्रति सजग बनाती हैं, उसे समाज की कठोरताओं के प्रति सचेत करती हैं और उसकी आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इस प्रकार, ममता कालिया का कथा साहित्य न केवल शहरी समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक समस्याओं को उद्घाटित करता है, बल्कि स्त्री विमर्श के क्षेत्र में एक नया आयाम भी प्रस्तुत करता है। उनका लेखन समकालीन स्त्री चेतना का सशक्त दूत है जो आज भी हिंदी साहित्य में प्रासंगिक और प्रेरणादायक बना हुआ है। भविष्य में भी उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत रहेंगी, बल्कि सामाजिक सुधार और स्त्री मुक्ति के आंदोलन में भी मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेंगी।

संदर्भ सूची

1. कालिया, म. (2022). ब्लैक होल (कहानी संग्रह). नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
2. कुमार, र. (2020). हिंदी कथा साहित्य में शहरी समाज की अभिव्यक्ति. पटनाः साहित्य माला।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

3. गुप्ता, स. (2021). हिंदी कहानी में शहरी जीवन का यथार्थ. पटनाः साहित्य माला।
4. चौधरी, न. (2015). नारी लेखन की बदलती धाराएँ. भोपालः भारतीय साहित्य प्रकाशन।
5. त्रिपाठी, र. (2018). समकालीन हिंदी उपन्यास और स्त्री विमर्श. नई दिल्लीः साहित्य अकादमी।
6. मिश्र, अ. (2020). हिंदी की शहरी कथा–धारा. वाराणसीः ग्रंथशिल्पी।
7. मिश्रा, क. (2018). स्त्री विमर्श और हिंदी उपन्यास. वाराणसीः साहित्य निकेतन।
8. यादव, क. (2017). हिंदी उपन्यास में स्त्री पात्रों का चित्रण. इलाहाबादः ज्ञान प्रकाशन।
9. रॉय, म. (2016). भारतीय नारीवाद की दिशाएँ. दिल्लीः सेज पब्लिकेशन्स।
10. वर्मा, क. (2020). ममता कालिया का कथा साहित्यः एक आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्लीः साहित्य वर्धन।
11. शर्मा, उ. (2012). हिंदी कथा साहित्य और स्त्री दृष्टिकोण. दिल्लीः साहित्य भारती।
12. सिंह, क. (2019). ममता कालिया की कहानियों में स्त्री चेतना का विकास. इलाहाबादः साहित्य निकेतन।
13. सिंह, प. (2018). ममता कालिया की कहानियों में स्त्री चेतना. लखनऊः साहित्य निकेतन।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY